



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-10-26	4	3-5

एमओयू • सरसों की नई विकसित आरएच 1975 व आरएचएच 2101 पहुंचेंगी किसानों तक आरएच 1975 किस्म : प्रति एकड़ 15 क्विंटल उत्पादन संभव, तेल मात्रा 39.5 प्रतिशत तक

भास्करन्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने आरएच-1975 और आरएचएच 2101 का बीज अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी कंपनियों के साथ एमओयू किया है। इसी कड़ी में साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, धरौड़ा, करनाल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में हुए समझौते पर साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, धरौड़ा, करनाल की ओर से निदेशक सुभाष खुराना ने जबकि विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढोंगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. रामअवतार, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. जितेन्द्र भाटिया, डॉ. अनुराग व कंपनी प्रतिनिधि उपस्थित रहे। साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, धरौड़ा, करनाल के निदेशक सुभाष खुराना ने बताया कि कंपनी दोनों किस्मों के बीज तैयार कर मार्केट में उपलब्ध करवाएगी।



हिसार | एमओयू के दौरान एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी।

जानिए... आरएच 1975 और आरएचएच 2101 की क्या हैं विशेषताएं

■ **सरसों की आरएच 1975 किस्म :** एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि आरएच 1975 किस्म 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा करीब 39.5 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है।

■ **आरएचएच 2101 किस्म :** यह किस्म 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है और 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत उपज देती है। इस किस्म में शाखाओं की संख्या अधिक होती है तथा प्रति फलियां में दानों की संख्या भी ज्यादा होती है जिसके कारण इसकी उपज क्षमता अन्य उन्नत किस्मों की तुलना में अधिक है इसके दाने मध्य आकार के होते हैं और इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है।

एक्सपर्ट ब्यू

डॉ. आरके पात्र, पूर्व डीन,
एग्रीकल्चर कॉलेज, एचएयू।

15 से 31 अक्टूबर तक बिजाई का सही समय

सरसों बिजाई का उपयुक्त समय 15 से 31 अक्टूबर सरसों की बिजाई के लिए अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा सही समय है, 31 अक्टूबर तक सरसों की बिजाई की जा सकती है। इसके बाद 10 नवंबर तक पछेती सरसों की बिजाई हो सकती है।

पछेती फसल में बीमारियां ज्यादा होने का खतरा रहता है, जिसमें फसल में सफेद रतुआ, चेपा का प्रकोप बढ़ सकता है। पछेती बिजाई में फसल का उत्पादन भी 25 प्रतिशत तक कम हो सकता है। इसलिए फसल की बिजाई सही समय करें।

किसानों की आर्थिक स्थिति में होगा सुधार : वीसी

■ एचएयू में विकसित आरएच 1975 और आरएचएच 2101 किस्मों को ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी कंपनी के साथ एमओयू किया है। किसानों को विश्वव्यापी किस्मों का बीज एवं उपलब्ध करवाकर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।
— प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, एचएयू।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्जित समाचार	13-10-26	12	1-3

हकृति ने सरसों की उन्नत किस्म आरएच 1975 व आरएचएच 2101 के लिए निजी कम्पनी से किया समझौता

हिसार, 12 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह आरएच 1975 व आरएचएच 2101 के लिए निजी कम्पनी से किया समझौता



हिसार, 12 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह आरएच 1975 व आरएचएच 2101 के लिए निजी कम्पनी से किया समझौता

हिसार, 12 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह आरएच 1975 व आरएचएच 2101 के लिए निजी कम्पनी से किया समझौता



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि न्यूज	13-10-26	9	1-3

हकृवि ने निजी कंपनी से किया समझौता

उन्नत किस्मों से बढ़ेगी सरसों की पैदावार

हरिन्यूज न्यूज » हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने अपने वैज्ञानिकों द्वारा विकसित सरसों की उन्नत किस्मों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनी साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, घरौंडा, करनाल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत विश्वविद्यालय की सरसों की उन्नत किस्मों आरएच 1975 और आरएचएच 2101 के बीज किसानों तक पहुंचाने की दिशा में काम किया जाएगा।



कुलपति की मौजूदगी में हुआ समझौता

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि हकृवि के वैज्ञानिक लगातार फसलों की उन्नत किस्में विकसित कर रहे हैं। इन किस्मों को किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को विश्वसनीय और गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध करवाकर प्रदेश और देश के कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में भी मदद मिलेगी। समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड की ओर से कंपनी के निदेशक सुभाष खुराना व विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने समझौते पर हस्ताक्षर किए।

ये हैं नई किस्मों की खूबियां

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि सरसों की आरएच 1975 किस्म की औसत उपज 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ है, जबकि इसकी उत्पादन क्षमता 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ तक है। इस किस्म में तेल की मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। अधिक पैदावार और तेल की अच्छी मात्रा के कारण यह किस्म किसानों के लिए उपयोगी है। डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि सरसों की आरएचएच 2101 किस्म लगभग 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। इस किस्म में शाखाओं की संख्या अधिक होती है और प्रति फली दानों की संख्या भी ज्यादा होती है, जिससे इसकी उत्पादन क्षमता बेहतर रहती है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं और इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल की मात्रा पाई जाती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13.10.26	4	1-4

सरसों की उन्नत किस्म के लिए निजी कंपनी से समझौता

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किए गए उन्नत किस्म के बीज अधिक से अधिक किसानों तक उपलब्ध करवाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापन किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में निजी क्षेत्र की कम्पनी साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड घरौंडा करनाल के साथ हकूवि द्वारा विकसित सरसों की उन्नत किस्म आरएच 1975 व आरएचएच 2101 के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही है। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में

• बीसी बोले-विवि के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विकसित की जा रही फसलों की उन्नत किस्में

• आरएचएच 2101 किस्म 142 दिन में पककर हो जाती तैयार औसत उपज 28 से 30 विंटल



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के प्रतिनिधि व अधिकारी • जागरण

बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में हुए समझौते पर साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, घरौंडा, करनाल की ओर से निदेशक सुभाष खुराना ने जबकि विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर

पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. नरेश कौशिक, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. रमेश गोयल, डा. एसके पाहुजा, डा. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, डा. विरेन्द्र मोर, डा. रामभवतार, डा. योगेश जिंदल, डा. जितेन्द्र भाटिया, डा. अनुराग व कंपनी प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आरएच 1975 किस्म का औसत उत्पादन 12 विंटल

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि आरएच 1975 किस्म 11 से 12 विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएचएच 2101 किस्म 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है और 28 से 30 विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत उपज देती है। इस किस्म में शाखाओं की संख्या अधिक होती है तथा प्रति फलियां में दोनों की संख्या भी ज्यादा होती है जिसके कारण इसकी उपज क्षमता अन्य उन्नत किस्मों की तुलना में अधिक है। इसके दाने मध्य आकार के होते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहें	13.10.26	-----	----

आरएच 1975 और आरएचएच 2101 के लिए साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड से समझौता हरियाणा के किसानों को मिलेंगे एचएच के सरसों के दो उन्नत किस्मों के बीज



● कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज की मौजूदगी में हुआ एमओयू

सच कहें/मुकेश

हिसार, 12 अक्टूबर। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने अपनी दो उन्नत सरसों किस्मों को प्रदेश के अधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनी साहिब सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, घरौंडा के साथ समझौता किया है। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज की मौजूदगी में कंपनी निदेशक सुभाष खुराना और

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो. कम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार फसलों की उन्नत किस्में विकसित कर रहे हैं और निजी कंपनियों के साथ समझौते से विश्वसनीय बीज किसानों तक पहुंचेंगे, जिससे उत्पादन और किसानों की आय में वृद्धि होगी। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. नरेश कौशिक, डॉ. रमेश गोयल सहित कई वैज्ञानिक मौजूद रहे।

दोनों किस्मों की खासियत

अनुसंधान निदेशक डॉ. गर्ग ने बताया कि आरएच 1975 किस्म की औसत उपज 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ है और क्षमता 15 क्विंटल तक है, इसमें तेल की मात्रा 39.5 प्रतिशत है। वहीं आरएचएच 2101 किस्म 142 दिन में पककर तैयार होती है, इसकी औसत उपज 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, इसमें शाखाएं और प्रति फली दाने अधिक होते हैं और तेल की मात्रा लगभग 40 प्रतिशत है।